नाम — मोहिनी सिंह

मो0नं0 — 7982386181

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका

प्रस्तावना–

प्रत्येक युवक राष्ट्र की सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति होती है क्योंकि उनकी बुद्धिमत्ता एवं कड़ी मेहनत देश को सफलता एवं समृद्धि बनाई जाती है जैसे कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य कुछ दायित्व अपने राष्ट्र के प्रति होता है वैसे ही योग भी है प्रत्येक राष्ट्र के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

युवा वर्ग एवं उसकी शक्ति–

आज का छात्र कल का नागरिक होगा उसी के सफल कंधों पर राष्ट्र के निर्माण एवं विकास का भार होगा प्रत्येक देश की एवं युवतियां उसकी शक्ति का महान सागर होता है उसमें उत्साह जरूरत स्रोत होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी शक्तियों को प्रयोग रचनात्मक कार्य में किया जाता है अन्यथा तोड़फोड़ विध्वंशकारी कार्यों में न किया जाए प्रतिदिन समाचार पत्रों में ऐसी घटनाएं प्रकाशित होती रहती हैं उससे क्यों अनावश्यक मांगों को लेकर आक्रोश बढ़ता ही जा रहा है साथ ही इस शक्ति का प्रयोग सृजनात्मक कार्य में किया जाए तो देश का कायापलट सकता है।

नैतिकता के विचार पर आधारित गुणों का विकास–

मनुष्य का विकास स्वस्थ बुद्धि एवं चिंतन करने से होता है इन गुणों का विकास नैतिकता पर आधारित होता है इसलिए अपने और राष्ट्रीय जीवन की समृद्धि के लिए नैतिक बल बड़ाना चाहिए छात्राओं को और समाज में नैतिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

अनुशासन के विचारों को महत्व देना–

अनुशासन के बिना कोई भी कार्य सुचारु रुप से संपन्न नहीं हो सकती है राष्ट्र निर्माण तो अनुशासन का ही मुख्य तत्व है इसलिए विद्यार्थियों का दायित्व है कि अनुशासन में रहकर राष्ट्र निर्माण एवं विकास के बारे में चिंतन करें।

कर्तव्यों का निर्वाह–

आज छात्रा अपने समाज में रहकर ही अपनी शिक्षा को प्राप्त करता है पहले की तरह गुरुकुल में जाकर नहीं रहता है इसलिए उस पर अपने राष्ट्रीय परिवार और समाज आदि के लिए अनेक दायित्व हो गए हैं जो भी छात्र अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह करता है उसे ही हम चर्चा विद्या सिक्का सकते हैं राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में विद्यार्थियों में कर्तव्य परायणता का भावना विकसित होना परम आवश्यक है।

स्वयं सचेत रहते हुए सजगता का वातावरण उत्पन्न करना–

युवक सम–सामाजिक प्रतिरूप के सचिव एवं सजग रहते हुए ही राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं आज के समय में विश्व विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है इसलिए अब प्रगति ने प्रत्येक क्षेत्र में भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा। युवाओं को इस प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित होने से पूर्व सामाजिक गतिविधियों के प्रति सचेत हो जाना चाहिए और दूसरों को भी सचेत कर देना चाहिए।

समाजसेवी–

हमारा पालन–पोषण विकास ज्ञानार्जन इस समाज में ही संभव है इसलिए प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में चिंतन और मनन करें इससे हमारे देश की उन्नति होगी।

अनुसंधान के क्षेत्र में–

आज का विकास वैज्ञानिक तथ्य पर आधारित है जितना ही विज्ञान में उन्नति होगी वैसे ही राष्ट्र का विकास होता जाएगा इसलिए छात्रों को नई नई चीजों के बारे में अध्ययन करके अपने राष्ट्र के लिए कुछ करें।

निष्कर्ष–

आज का नागरिक कल की स्थिति को आकार देने जा रहा है इसलिए छात्रा को पर्याप्त अवसर प्रदान करके उनकी क्षमता एवं शक्तियों का उपयोग करना चाहिए और दूसरा लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कारक है युवक को सशक्त बनाना है क्योंकि उनके सामने अनेक चुनौतियां रहेंगी और उनको उस चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा ऐसा करने से हमारे राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होगा।